(Cover Page)

2018

21वीं सदी में महिला सुरक्षा

समस्या एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

डॉ. नीतू गुप्ता

Dr. Madhulika Pathak
Principal
Government Degree College
Kanda (Bageshwar)

© डॉ. नीशू कुमार
डॉ. नीतू गुप्ता

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत है। इस पुस्तक में व्यक्त विचारो से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक

AARTI PRAKASHAN

4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-27-7

मुद्रक

ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज,
दिल्ली–110092

Dr. Madhulika Pathak
Principal
Government Degree College
Kanda (Bageshwar)

Content Page

अनुक्रम

1	21वीं शताब्दी में भारतीय महिला सुरक्षा से सम्बन्धित कानूनी प्रावधान : एक अवलोकन	1
2	मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा एवं अधिकार एक अध्ययन	15
3	महिलाओं के उत्थान की बुनियादः सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता	28
4	शिक्षा और महिला सशक्तिकरणः एक समालोचनात्मक अध्ययन	33
5	वैश्वीकरण के युग में भारतीय महिलाऐं	45
6	"स्त्री हिंसाः, धार्मिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक संदर्भ"	53
7	महिलाओं की स्थिति का अध्ययन	66
8	"कानून–व्यवस्था के संदर्भ में महानगरीय स्तर पर उभरती हुई समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में पुलिस प्रशासन की भूमिका"	89
9	महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण में मीडिया की भूमिका	97
10	भारत में नारीवाद	102
11	भारत में महिलाओं के प्रति बढ़ते यौन अपराध एवं जन समुदाय की भूमिका	110

MRL

भारत में नारीवाद

डा0 नगेन्द्र पाल
असि0 प्रोफेसर राजनीति विज्ञान राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय काण्डा बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार सृष्टि की रचना स्त्री और पुरुष से ही हुई है. दोनों ही इस रचना विधान में महत्वपूर्ण हैं. क्योंकि एक–दूसरे के बगैर इस संसार को बसाया नहीं जा सकता था। उतना ही यह भी सत्य है कि शारीरिक गठन मजबूत होने के कारण पुरूष ने प्रकृति के क्रियाकलापों और जीव–जन्तु आदि पर धीरे–धीरे अधिकार कर लिया। इसी कारण विश्व के किसी भी छोर में नारी पुरुष से दबी रही है या अधीन रही है। पीढी दर पीढ़ी परिवार और स्त्री पर पुरुष का वर्चस्व हो गया अन्ततः पुरुष की वैयक्तिक सम्पत्ति स्त्री बन गयी।[1]

वाद शब्द जिस विषय के साथ जुडता है अपने साथ एक विचार, चिन्तन, क्रान्ति, संघर्ष और आन्दोलन के बीच लेकर चलता है। जैसे–जैसे ये वाद का बीज पनपता है या आगे बढता है वैसे ही वाद के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के सामने आने लगते हैं और उसी में सहमति, असहमति का दौर चलता है, जिसमें विभिन्न विचारों के बीच टकराहट होती है, जिससे एक रचनात्मक और सकारात्मक पक्ष हमारे सामने आता है जिसमें समाज के अनेक लोगों का हित समाहित होता है। नारीवाद एक विचारधारा है जिसके आधार पर महिलाओं की मुक्ति के लिए प्रयास किये जाते हैं। इसके अनेक रूप और अलग–अलग प्रवृत्तियां है जिसमें एक नारीवाद वह है जिसका मानना है कि हर पुरुष और हर स्त्री के मध्य एक विरोध है जो बुनियादी नारीवाद। दूसरा नारीवाद समाजवादी नारीवाद है जिसका विश्वास है कि स्त्री होने के कारण उस पर होने वाले शोषण को अधिक उजागर करने की

Dr. Madhulika Pathak
Principal
Government Degree College
K... ...hwari